हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने वाली शिक्षा मिले

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विवि के कुलपति रजनीश कुमार शुक्ल का प्रतिपादन

नागपुर। 24 अप्रैल। लोस सेवा

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के नए कुलपति रजनीश कुमार शुक्ल का कहना है कि हिंदी हमेशा से ही विभिन्न अत्याचारों के खिलाफ लड़ने वाली भाषा रही है. यह परिवर्तन की भाषा रही. आज वह बाजार की भाषा है. लेकिन देश की भाषा होने के लिए उसे जन-जन में स्वीकार्यता हासिल करनी होगी. इसके लिए हिंदी भाषा को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने वाली शिक्षा मुहैया करानी होगी. कुलपति रजनीश शुक्ल ने 'लोकमत समाचार' के साथ साक्षात्कार के दौरान ये बातें कहीं.

विकास में अनुशासन जरूरी: प्रो. शुक्ल ने कहा कि हिंदी भाषी इलाकों में भी आज पढ़ने -पढ़ाने का तरीका बदला है, जिसका असर हिंदी पर पड़ा है. व्याकरण भाषा का कारखाना है और अनुशासन भी है. आपमें यदि अनुशासन नहीं हो तो आप शब्दों के साथ खेल नहीं सकते. जब ऐसा होता है तो भाषा अपने

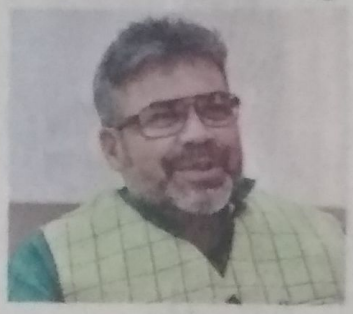

रजनीश कुमार शुक्ल

आप बोझिल हो जाती है. हिंदी के साथ दिक्कत यह रही कि यहां शब्द जन्में, पले -बढ़े और लंबे समय तक इस्तेमाल हुए और फिर एक दिन मर गए. जब हिंदी को उन्हीं शब्दों की जरूरत पड़ी तो अंग्रेजी से उधार लेने की नौबत आन पड़ी. हिंदी के क्षेत्र में कार्यरत सभी को अब इसमें परिवर्तन लाने की दिशा में सोचना और काम करना है. वर्धा स्थित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय इस अभियान की अगुवाई करेगा. साथ ही इस अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का दूसरे हिस्सों में विस्तार करना है.

प्रो. शुक्ल का परिचय: वर्तमान में प्रो. शुक्ल भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सदस्य सचिव पद पर कार्यरत हैं. प्रो. शुक्ल सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में तुलनात्मक दर्शन और धर्म के प्रोफेसर तथा राष्ट्रपति द्वारा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कोर्ट के नामांकित सदस्य भी रहे हैं. वे नई दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के वाराणसी क्षेत्र के सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे हैं. प्रो. शुक्ल ने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी से स्नातक एवं परास्नातक की उपाधि एवं बीएचयू से दर्शनशास्त्र में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है. उन्होंने सात पुस्तकें लिखी हैं और उनके सौ से ज्यादा शोध पत्र, आलेख, देश और विदेश की विभिन्न शोध पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हुए हैं. उन्होंने कुलसचिव, कार्यकारी परिषद के सदस्य और निदेशक, कॉलेज विकास परिषद और अन्य कई पदों के रूप में विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएं दी हैं.

शब्दों का आदान-प्रदान होते रहना चाहिए

प्रो. शुक्ल ने कहा कि हिंदी काल अनुरूप चलने वाली भाषा है. उसके इस स्वभाव को संजोने के लिए उसे समय के साथ जोड़े रखना होगा. यह बात सुखद है कि आज संचार माध्यम में हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है. समाज में भी हिंदी की स्वीकृति बनी हुई है. ऐसे में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का कुलपति होने के नाते मेरी यह जिम्मेदारी है कि आने वाले समय में हिंदी की सेवा में समर्पित सभी संस्थाओं को साथ लेकर मैं इसका विस्तार करूं. प्रो. शुक्ल के अनुसार हिंदी को अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द लेने चाहिए और अन्य भारतीय भाषाओं को भी अपने शब्द देते रहना चाहिए. प्रो. शुक्ल यह भी मानते हैं कि अब पहले की तरह हिंदी में नए शब्दों का सृजन नहीं हो रहा है. उन्होंने माना कि स्वतंत्रता पूर्व काल में जिस तरह विनोबा, गांधी, गोलवलकर, लोहिया लोक में स्वीकार शब्दों को हिंदी में लाते रहे, और इसमें नए शब्दों का सृजन होता रहा, वैसे अब नहीं हो रहा है.